श्री पंचमेरू पूजा एवं अर्घ

ढ़ाई द्वीप में पाँच मेरू पर्वत हैं (१.सुदर्शन मेरू २.विजय मेरू ३.अचल मेरू ४.मंदिर मेरू ५. विद्युन्माली मेरू) इसमें बीच का सुदर्शन मेरू एक लाख योजन का है। बाकी चार मेरू ८४००० योजन ऊँचे हैं। इन एक एक मेरू पर १६-१६ जिनालय हैं। सब मिला कर ८० जिनालय हैं।

ये पर्व वर्ष में चार समय मनाये जाते है

१. आषाढ़ सुदी अष्टमी से आषाढ़ सुदी पूर्णिमा तक
२. भाद्रपद सुदी पंचमी से भाद्रपद सुदी नवमी तक
३. माघ सुदी पंचमी से माघ सुदी नवमी तक
४. चैत्र सुदी पंचमी से चैत्र सुदी नवमी तक

अर्घ

आठ दरबमय अर्घ बनाय, द्यानत पूजों श्रीजिनराय।
महासुख होय, देखे नाथ परम सुख होय।।
पाँचों मेरु असी जिन धाम, सब प्रतिमाको करों प्रणाम।
महा सुख होय, देखे नाथ परम सुख होय।।

ॐ ह्रीं पँचमेरु सम्बन्धि अस्सी जिन चैत्यालयस्थ: जिनबिम्बेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

पंचमेरू पूजा

तीर्थंकरों के न्हवन-जलतैं, भये तीरथ सर्वदा।
तातैं प्रदच्छन देत सुरगन, पंचमेरुन की सदा।।
दो जलधि ढ़ाई द्वीप में, सब गनत-मूल विराजहीं।
पूजौं असी जिनधाम-प्रतिमा, होहिं सुखदुख भाजहीं।।

ॐ ह्रीं पंचमेरुसम्बन्धीजिन चैत्यालयस्थजिनप्रतिमासमूह ! अत्र अवतर अवतर संवौषट्।
ॐ ह्रीं पंचमेरुसम्बन्धीजिनचैत्यालयस्थजिनप्रतिमासमूह ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः।
ॐ ह्रीं पंचमेरुसम्बन्धीजिनचैत्यालयस्थजिनप्रतिमासमूह! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्।

शीतलमिष्ट सुवास मिलाय, जलसौं पूजौं श्रीजिनराय।
महा सुख होय, देखे नाथ परम सुख होय।।
पाँचों मेरु असी जिनधाम, सब प्रतिमा को करों प्रणाम।
महा सुख होय, देखे नाथ परम सुख होय।।

ॐ ह्रीं पंचमेरुसम्बन्धीजिनचैत्यालयस्थजिनबिम्बेभ्यो जलं निर्वपामीति स्वाहा।।१।।

जल केश करपूर मिलाय, गंधसौं पूजों श्रीजिनराय।
महा सुख होय, देखे नाथ परम सुख होय।। पाँचों ...

ॐ ह्रीं पंचमेरुसम्बन्धीजिनचैत्यालयस्थजिनबिम्बेभ्यो चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।।२।।

अमल अखंड सुगंध सुहाय, अच्छतसौं पूजौं जिनराय।
महा सुख होय, देखे नाथ परम सुख होय।। पाँचों ...

ॐ ह्रीं पंचमेरुसम्बन्धीजिनचैत्यालयस्थजिनबिम्बेभ्यो अक्षतान निर्वपामीति स्वाहा।।३।।

वरन अनेक रहे महकाय, फूलनसौं पूजौं जिनराय।
महा सुख होय, देखे नाथ परम सुख होय।। पाँचों ...

ॐ ह्रीं पंचमेरुसम्बन्धीजिनचैत्यालयस्थजिनबिम्बेभ्यो पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।।४।।

मनवांछित बहु तुरत बनाय, चरुसौं पूजो श्रीजिनराय।
महा सुख होय, देखे नाथ परम सुख होय।। पाँचों ...

ॐ ह्रीं पंचमेरुसम्बन्धीजिनचैत्यालयस्थजिनबिम्बेभ्यो नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।।५।।

तमहर उज्जवल ज्योति जगाय, दीपसौं पूजौं श्रीजिनराय।
महा सुख होय, देखे नाथ परम सुख होय।। पाँचों ...

ॐ ह्रीं पंचमेरुसम्बन्धीजिनचैत्यालयस्थजिनबिम्बेभ्यो दीपं निर्वपामीति स्वाहा।।६।।

खेऊं अगर अमल अधिकाय, धूपसौं पूजौं श्रीजिनराय।
महा सुख होय, देखे नाथ परम सुख होय।। पाँचों...

ॐ ह्रीं पंचमेरुसम्बन्धीजिनचैत्यालयस्थजिनबिम्बेभ्यो धूपं निर्वपामीति स्वाहा।।७।।

सुरस सुवर्ण सुगंध सुभाय, फलसौं पूजौं श्रीजिनराय।
महा सुख होय, देखे नाथ परम सुख होय।। पाँचों...

ॐ ह्रीं पंचमेरुसम्बन्धीजिनचैत्यालयस्थजिनबिम्बेभ्यो फलं निर्वपामीति स्वाहा।।८।।

आठ दरबमय अरघ बनाय, 'द्यानत' पूजौं श्रीजिनराय।
महा सुख होय, देखे नाथ परम सुख होय।। पाँचों...

ॐ ह्रीं पंचमेरुसम्बन्धीजिनचैत्यालयस्थजिनबिम्बेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।।९।।

प्रथम सुदर्शन-स्वामि, विजय अचल मंदिर कहा।
विद्युन्माली नाम, पंचमेरु जग में प्रकट।।१०।।

केसरी छन्द : प्रथम सुदर्शन मेरु विराजै, भद्रशाल वन भूपर छाजै।
चैत्यालय चारों सुखकारी, मन वच तन वन्दना हमारी।।१।।
ऊपर पांच शतक पर सोहै, नंदन वन देखत मन मोहै।। चैत्या...।।२।।
साढ़े बासठ सहस ऊंचाई, वनसुमनस शोभै अधिकाई।। चैत्या...।।३।।
ऊँचा जोजन सहस छत्तीसं, पांडुकवन सोहै गिरिसीसं।। चैत्या...।।४।।
चारों मेरु समान बखानों, भूपर भद्रसाल चहुँ जानो।
चैत्यालय सोलह सुखकारी, मन वच तन वंदना हमारी।।५।।
ऊँचे पांच शतक पर भाखे, चारों नन्दन वन अभिलाखे।
चैत्यालय सोलह सुखकारी, मन वच तन वंदना हमारी।।६।।
साढ़े पचपन सहस उतंगा, वन सौमनस चार बहुरंगा।
चैत्यालय सोलह सुखकारी, मन वच तन वन्दना हमारी।।७।।
उच्च अठाईस सहस बताये, पांडुक चारों वन शुभ गाये।
चैत्यालय सोलह सुखकारी, मन वच तन वन्दना हमारी।।८।।
सुर नर चारन वन्दन आवैं, सो शोभा हम किह मुख गावैं।
चैत्यालय अस्सी सुखकारी, मन वच तन वन्दना हमारी।।९।।

दोहा:- पंचमेरु की आरती पढ़ै सुनै जो कोय।
'द्यानत' फल जानैं प्रभु तुरत महासुख होय।।१०।।

ॐ ह्रीं पंचमेरुसम्बन्धीजिनचैत्यालयस्थ जिनबिम्बेभ्यो पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा।